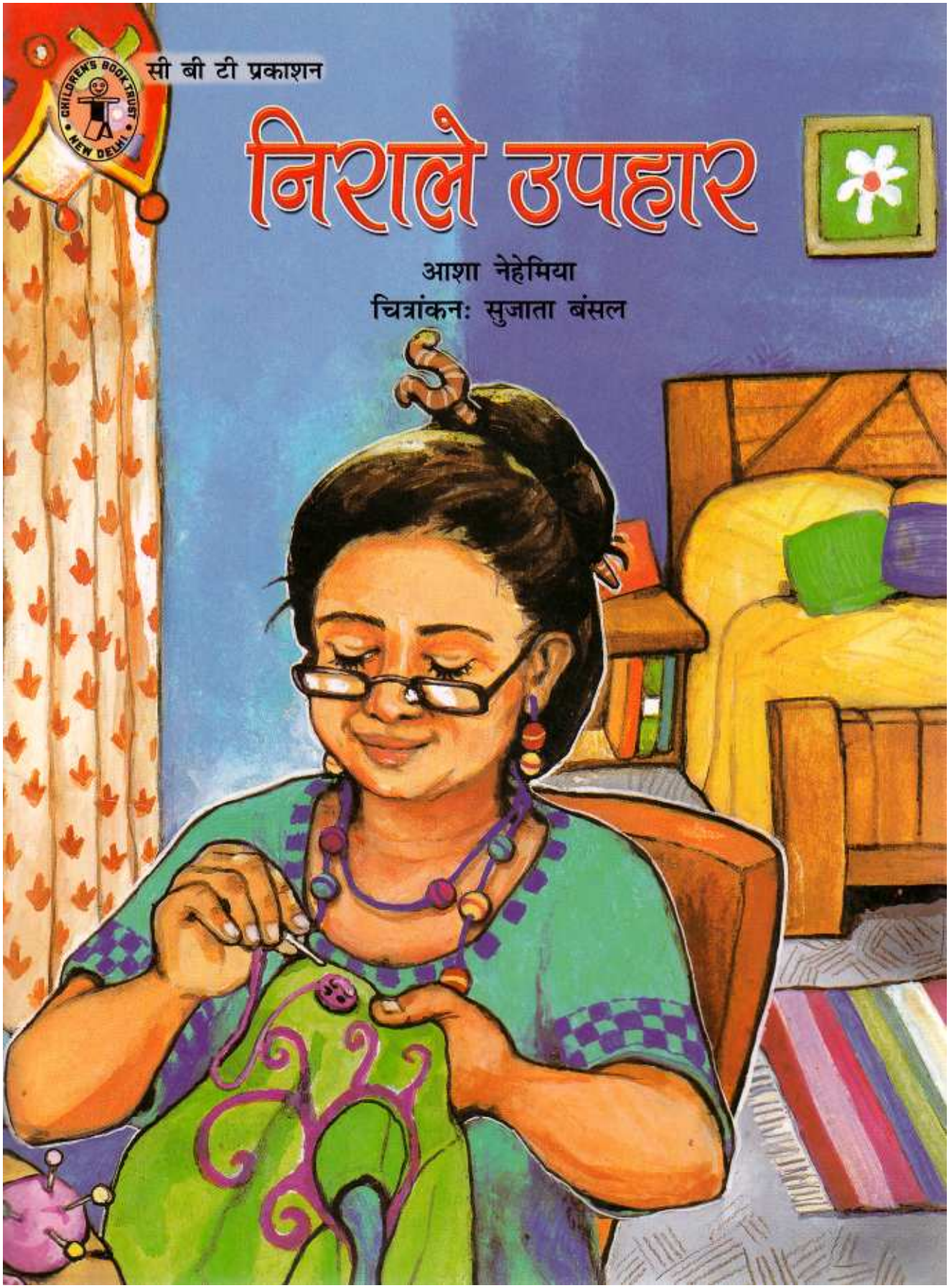

सी बी टी प्रकाशन

निराले उपहार

आशा नेहेमिया

चित्रांकन: सुजाता बंसल

निराले उपहार

लेखन: आशा नेहेमिया
चित्रांकन: सुजाता बंसल
अनुवाद: सचिन कामरा

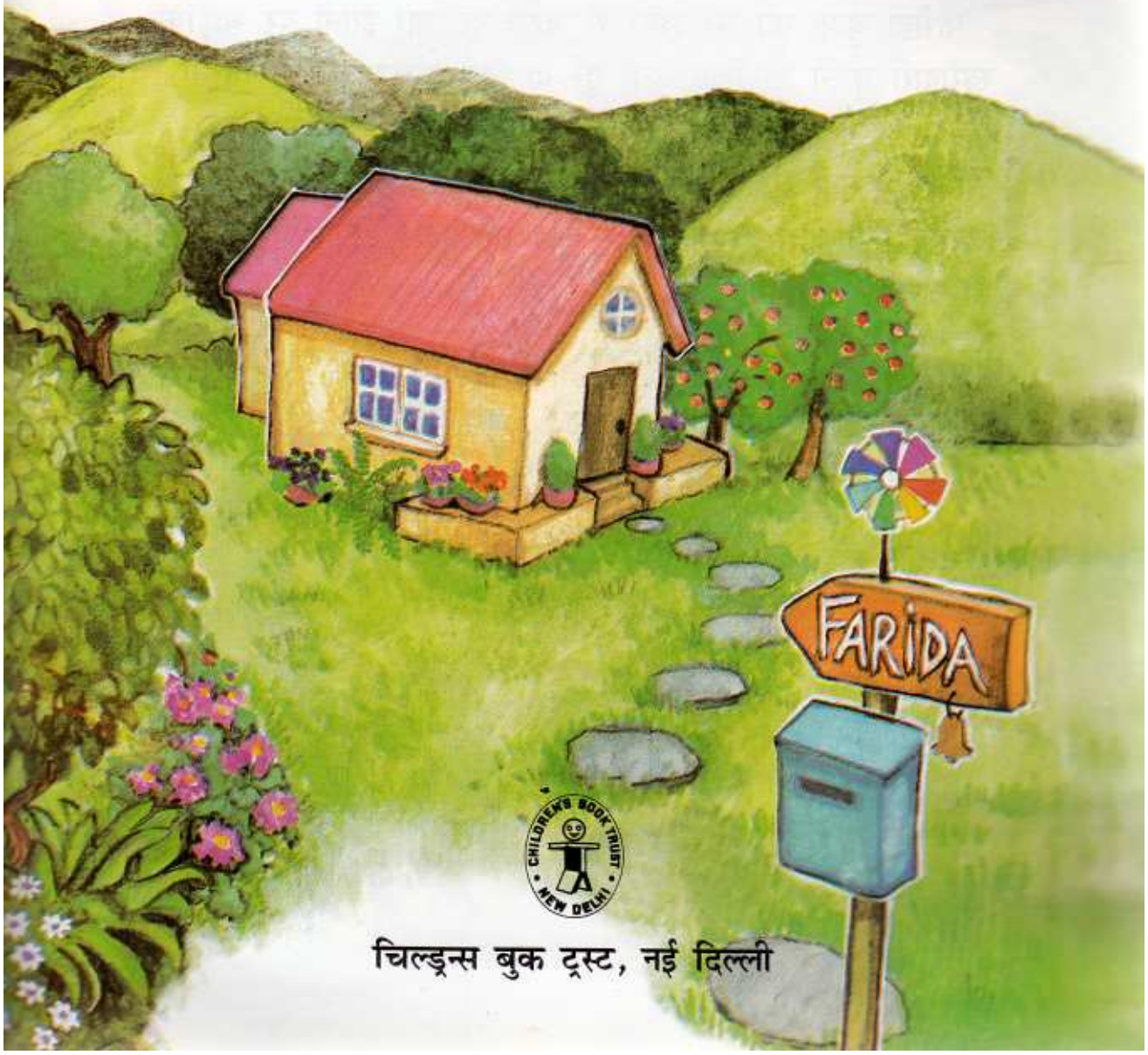

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

फरीदा बुआ का घर शहर से बहुत दूर था। इतनी दूर था कि खरीदारी करने के लिए उन्हें पूरे दो दिन की यात्रा तय करनी पड़ती थी। अधिकतर लोगों के लिए यह एक समस्या थी लेकिन फरीदा बुआ के लिए नहीं। बुआ को जो भी कुछ चाहिए होता, वह अपने आस-पास उपलब्ध सामान से स्वयं ही बनाना सीख गई थीं।

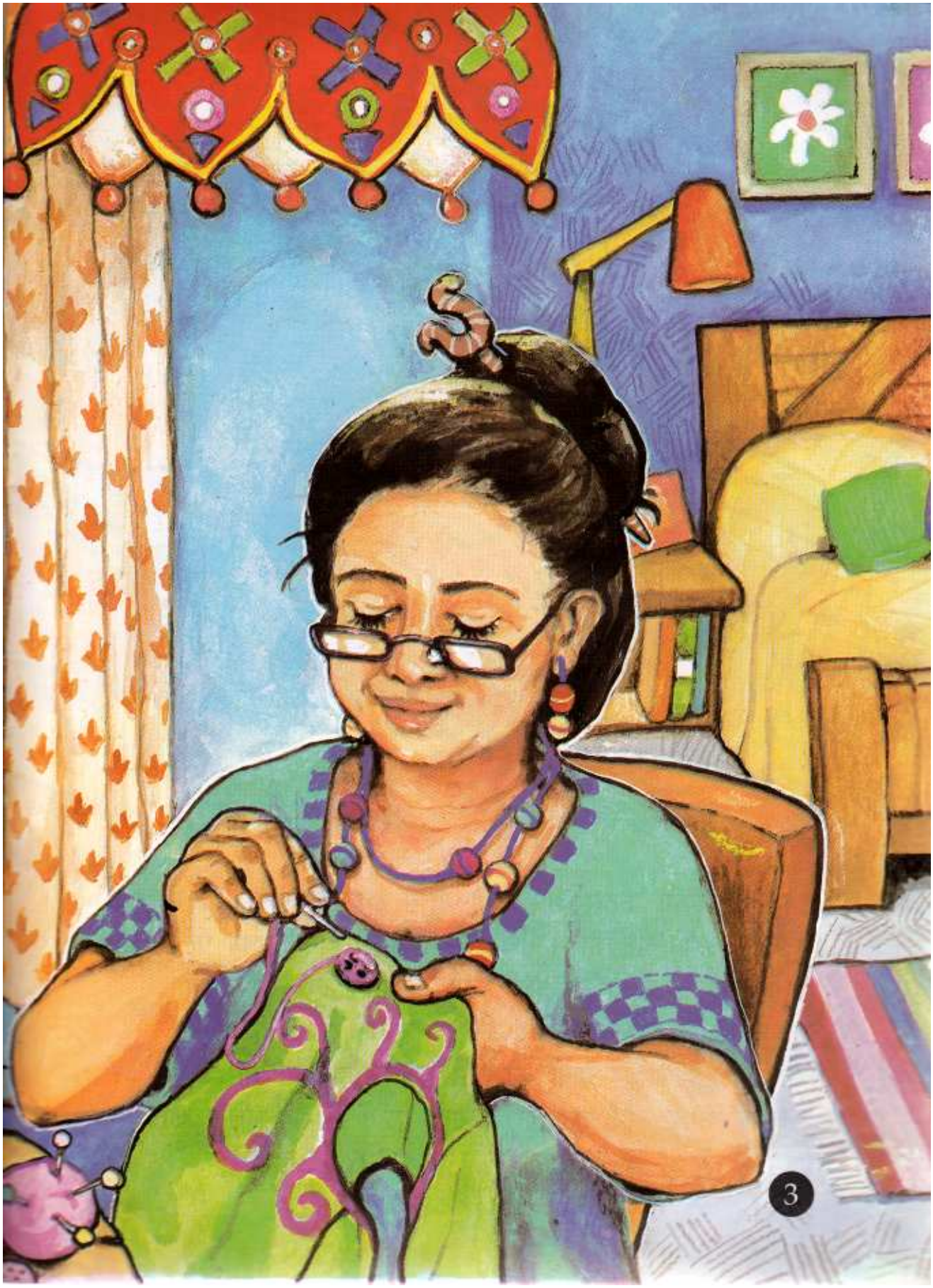

पुरानी पैकिंग क्रेट्स और बची-खुची लकड़ी के टुकड़ों से बुआ ने अपने घर का फर्नीचर बनाया हुआ था। उनका पलंग काफी हिलता रहता था और उनके डाइनिंग टेबल में इतना झुकाव था कि कभी-कभार उस पर खाना रखते ही लुढ़क जाता था। बुआ इन बातों की ओर ध्यान नहीं देती थीं।

अपने कपड़े और जूतों के अलावा दूसरों को दिए जाने वाले

उपहार भी फरीदा बुआ स्वयं ही बनाती थीं। बुआ ने बड़े ही अनोखे उपहार बनाए थे, जैसे फोटो फ्रेम, जुराब-टंगना, पीठ-खुजलाने वाला और ढेर सारी रोचक कहानियों की सुंदर कढ़ाई से सजी-धजी चादरें, जिसे कोई भी रात में सोने से पहले उत्सुकता से पढ़ना चाहे।

एक सुबह फरीदा बुआ कैलेंडर देख रही थीं। अगले महीने बीना का जन्मदिन था। बुआ को अपनी भतीजी बीना बहुत प्यारी है, इसलिए उन्होंने बीना के पूरे परिवार के लिए उपहार भेजने का मन बनाया।

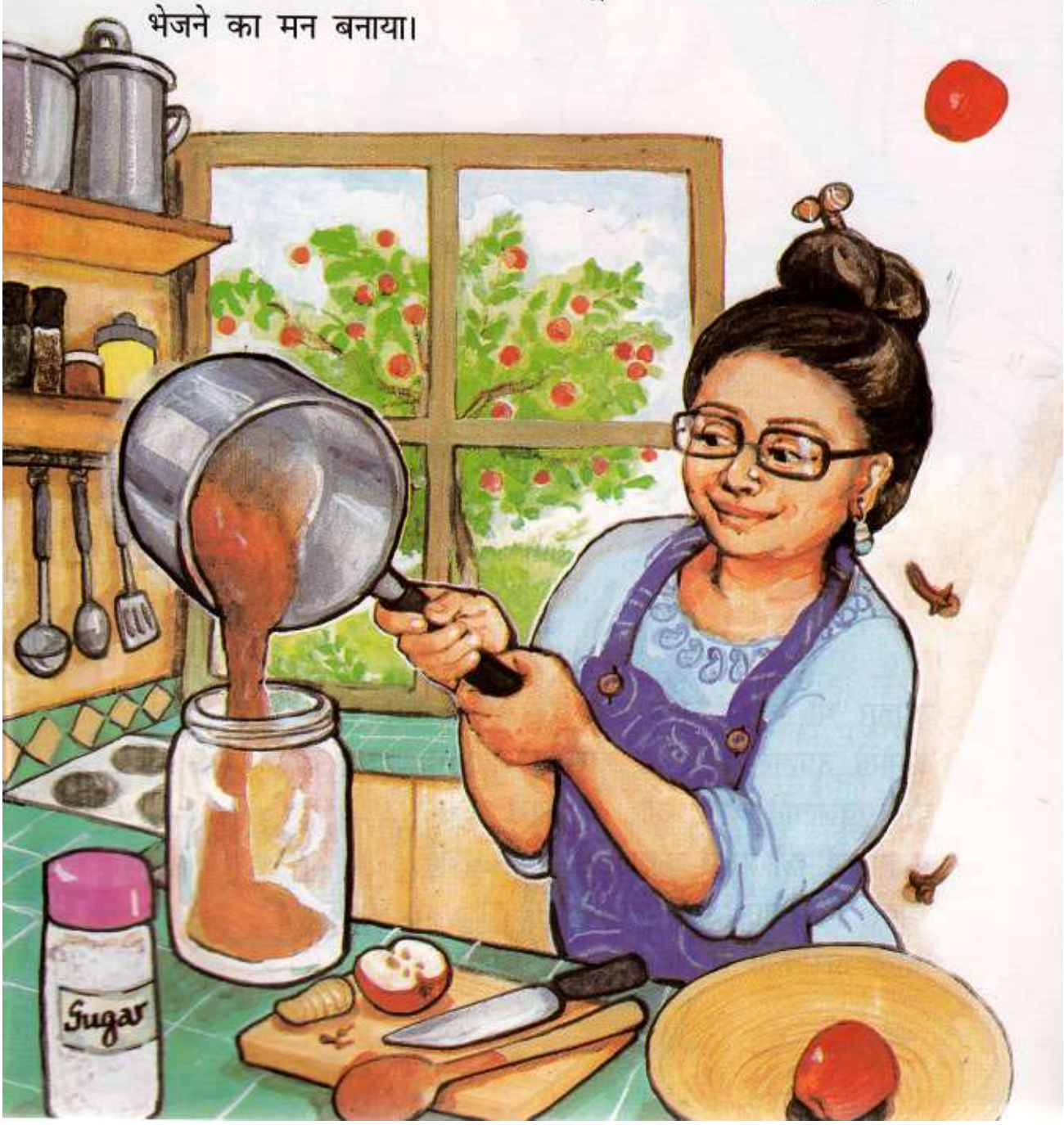

बीना की माँ के लिए बुआ ने अपने बगीचे के सेबों से मुरब्बे का एक बड़ा-सा जार तैयार किया। अदरक के स्वाद के साथ-साथ इस मुरब्बे में लौंग की भीनी खुशबू थी।

अपने भाई यानी बीना के पिता के लिए बुआ ने एक सुंदर-सा लैम्पशेड बनाया। नरम चमड़े की पट्टियों पर चमकदार रेशम और लेस के टुकड़ों को चिपकाकर उन्होंने इसे बनाया था।

बीना के भाई की ड्राइंग में बहुत रुचि है, इसीलिए फरीदा बुआ ने उसके लिए एक पेन-स्टैंड बनाया। बांस के बने इस स्टैंड पर उन्होंने बहुत ही सुंदर नक्काशी की। इसमें 36 छोटे-छोटे छेद बनाए। हर छेद में एक पेन आ सकता था।

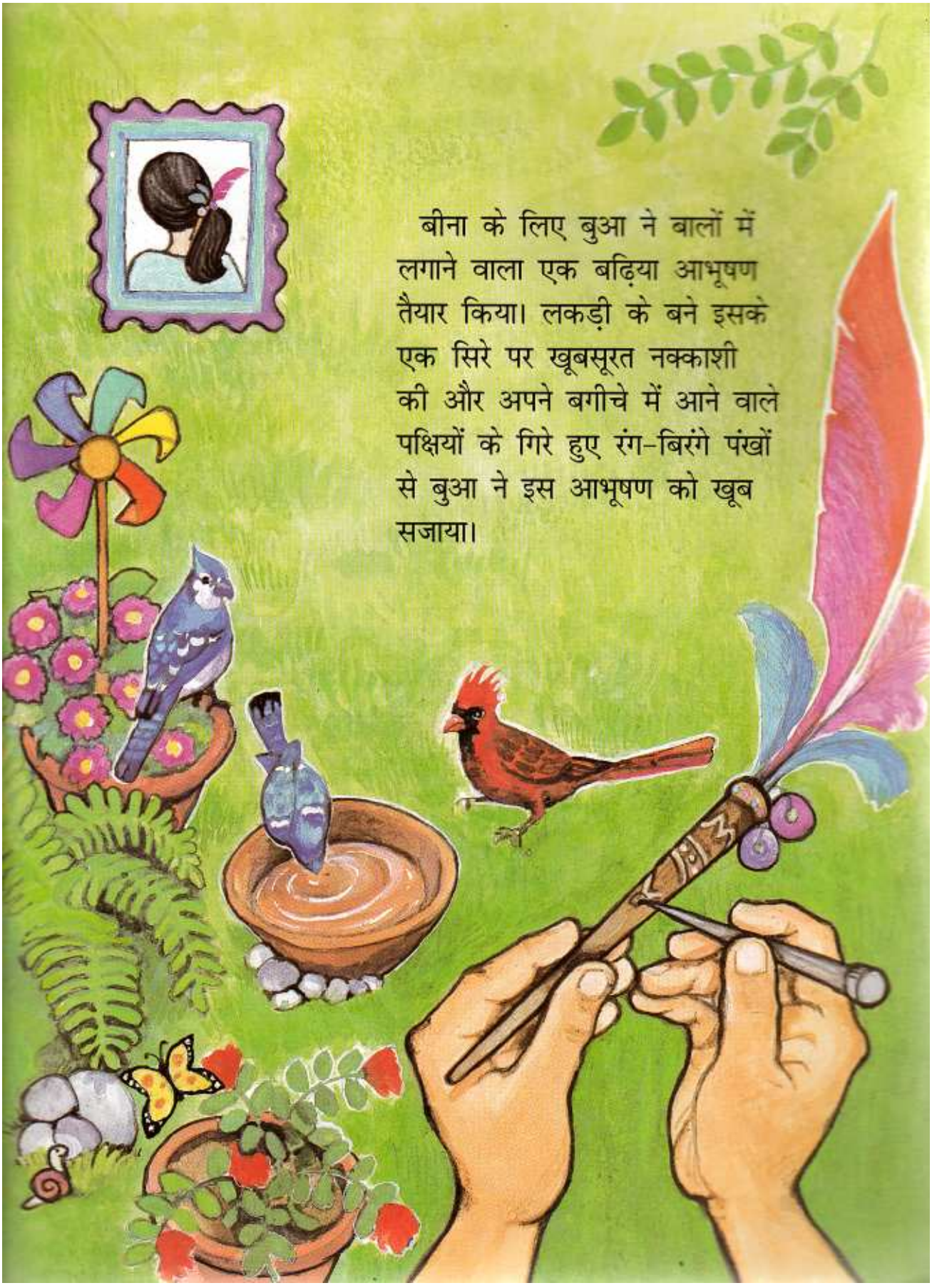

बीना के लिए बुआ ने बालों में लगाने वाला एक बढ़िया आभूषण तैयार किया। लकड़ी के बने इसके एक सिरे पर खूबसूरत नक्काशी की और अपने बगीचे में आने वाले पक्षियों के गिरे हुए रंग-बिरंगे पंखों से बुआ ने इस आभूषण को खूब सजाया।

पार्सल द्वारा भेजने से पहले बुआ ने इन सभी उपहारों की पैकिंग कर सबके नामों की पर्ची लगा दी।

बीना के घर तक इस पार्सल को पहुंचने में कई दिनों का समय लग गया। इस बीच उपहारों पर लगी पर्चियां भी उतर गईं। बीना ने पार्सल खोला। इसमें चार उपहार थे, यह पता नहीं लग पा रहा था कि कौन-सा उपहार किसके लिए है?

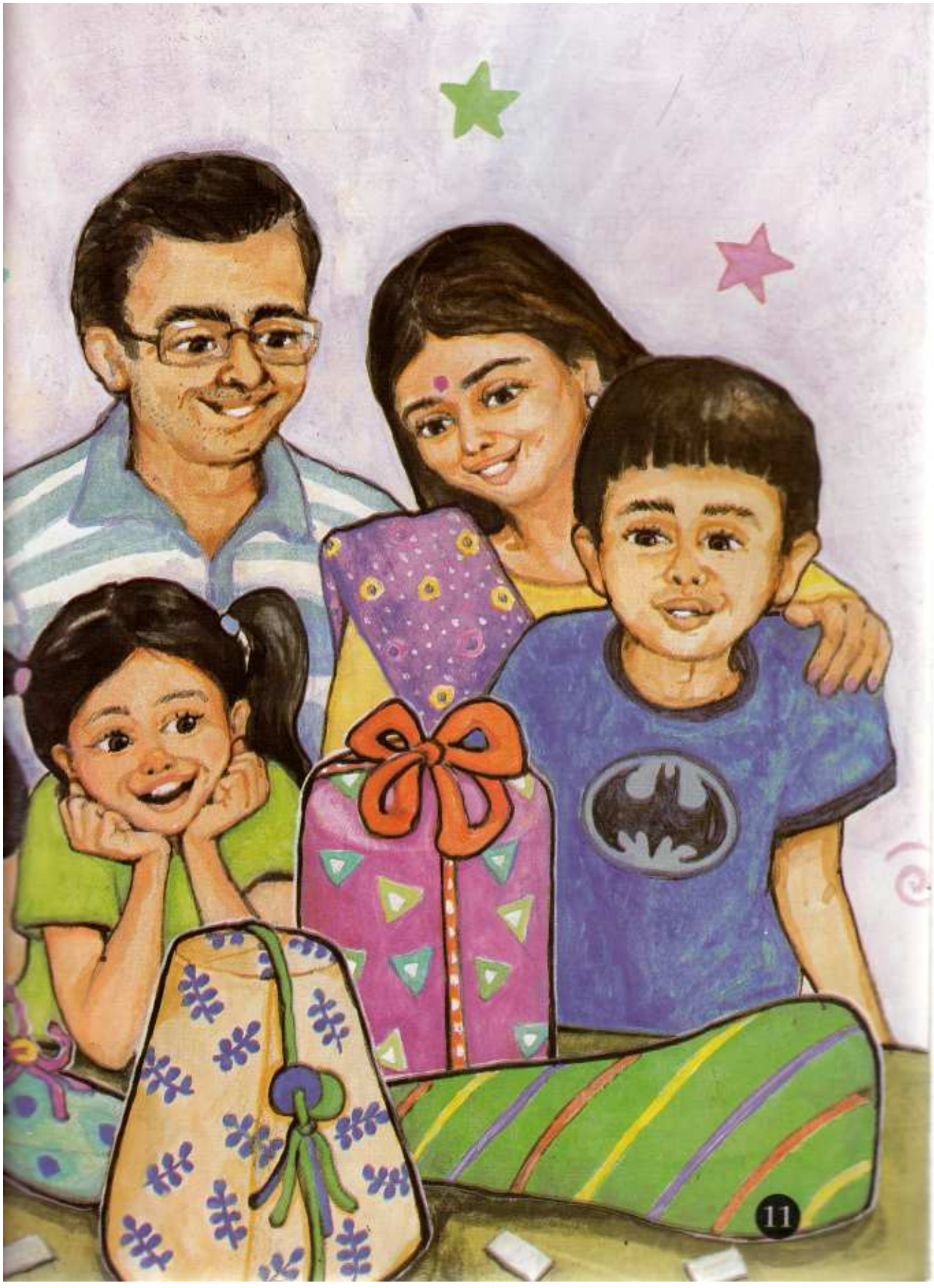

सबसे पहले बीना के पिता ने बड़ा वाला उपहार खोला जिसमें सेब के मुरब्बे का जार था। ढक्कन खोलकर उन्होंने देखा कि इसमें चिपचिपा और भूरा-सा कुछ है।

"अरे वाह!" बीना के पिता चिल्ला उठे, "यह तो मज़बूती से चिपकाने वाली गोंद है, मेरी बहन पेड़ों की गोंद और छाल को उबालकर इसे बनाती है। मुझे तो यह चाहिए भी थी।"

बीना के पिता ने वो मुरब्बा उठा लिया और इसे गोंद की तरह प्रयोग करने लगे।

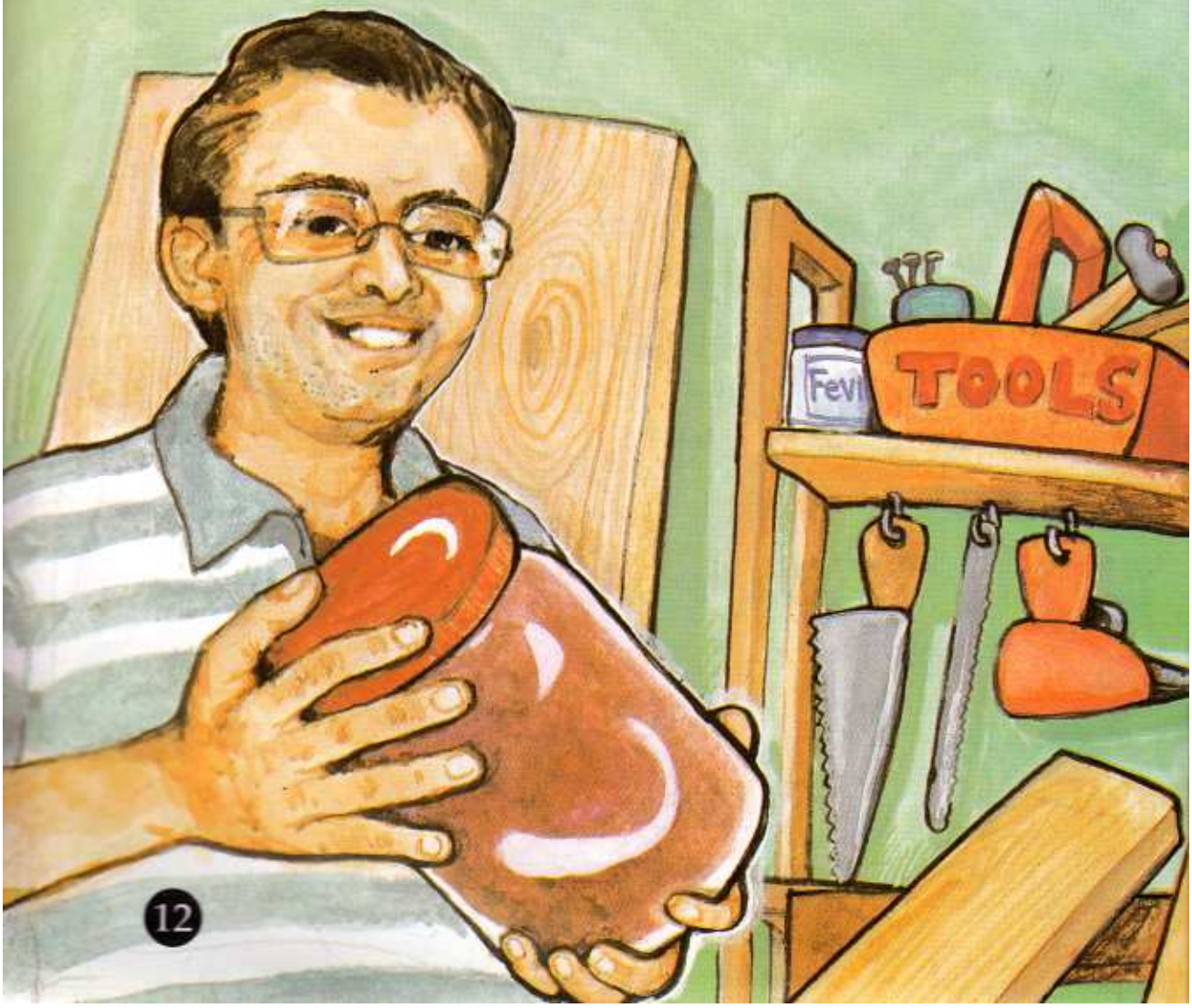

फिर खुला
लैम्पशेड वाला
उपहार। "वाहऽऽऽ!"
बीना ने कहा, "बुआ
ने मेरे लिए कितनी
प्यारी स्कर्ट बनाई
है!" बीना ने यह
पहन ली और बहुत
अनोखी-सी लगने
लगी।

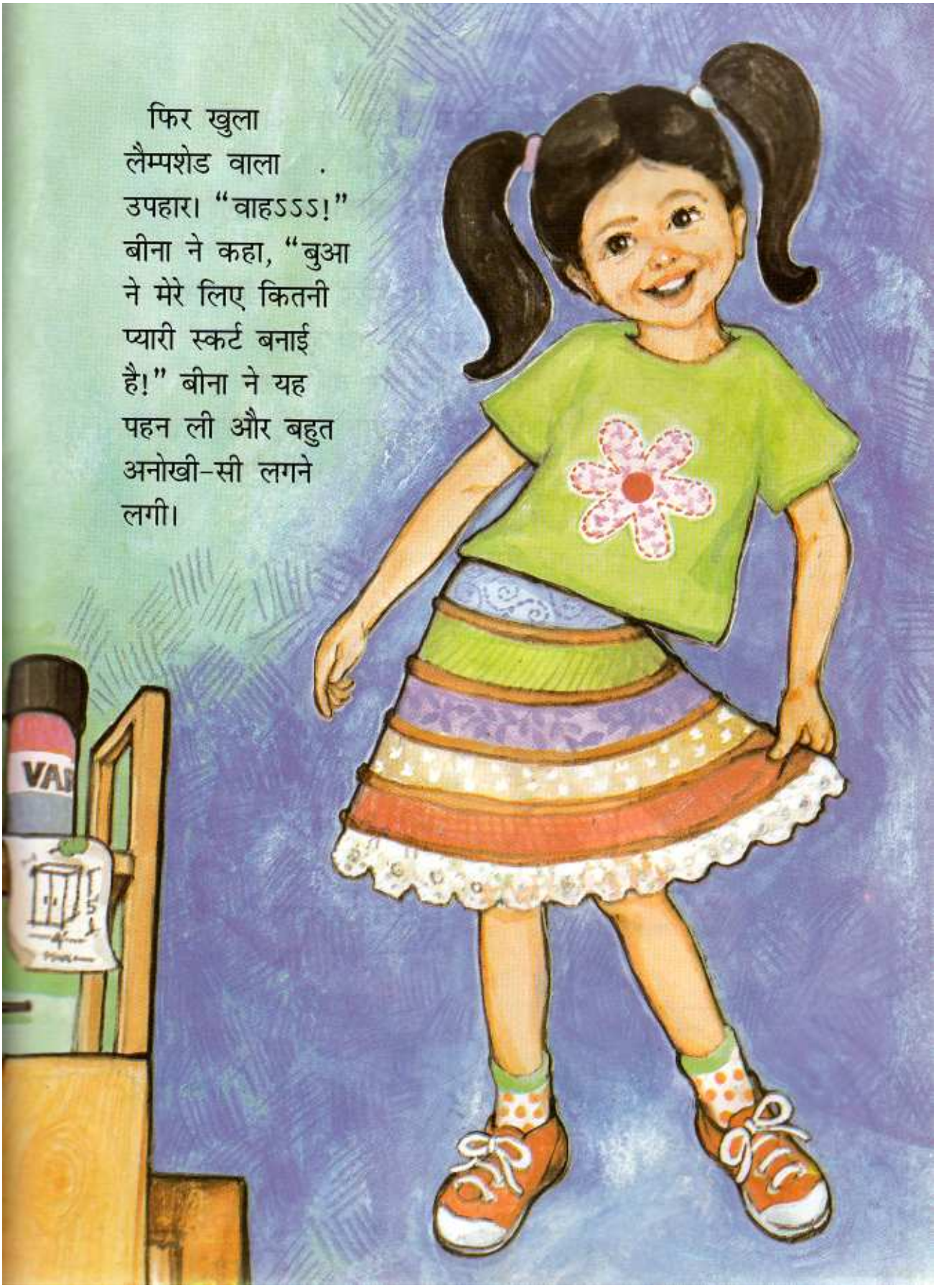

बीना के भाई की आँखें बालों में लगाने वाले आभूषण पर जा टिकीं। "पंखों वाला झाड़न, यह तो मेरे लिए है!" वह चिल्लाया। "मेरे कंप्यूटर और म्यूज़िक सीडी की सफाई के लिए तो यह खूब काम आएगा।"

जैसे ही बीना की माँ की नज़रें पेन-स्टैंड पर पड़ीं, उन्होंने इसे झट से उठा लिया। "अरे, यही तो मुझे चाहिए था!" खुशी से वह बोलीं, "बगीचे में पानी देने वाले पाइप पर फव्वारे के सिरे की तरह मैं इसका इस्तेमाल कर सकती हूं।"

इससे पहले कि इसे पेन-स्टैंड के रूप में कोई ठीक से देख भी पाता, बीना की माँ ने इसे पाइप के सिरे पर लगाया और पौधों पर छिड़काव करने लगीं।

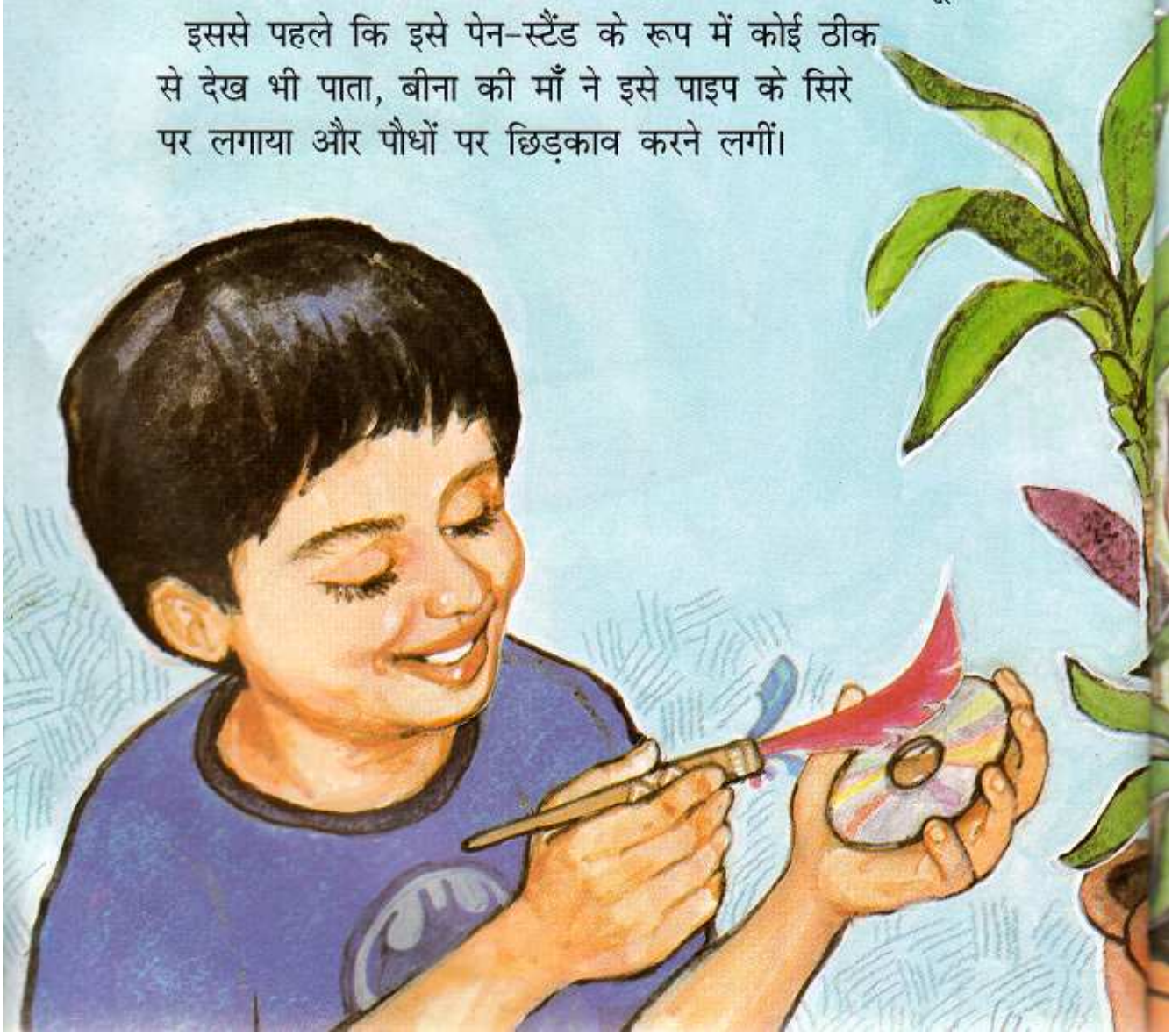

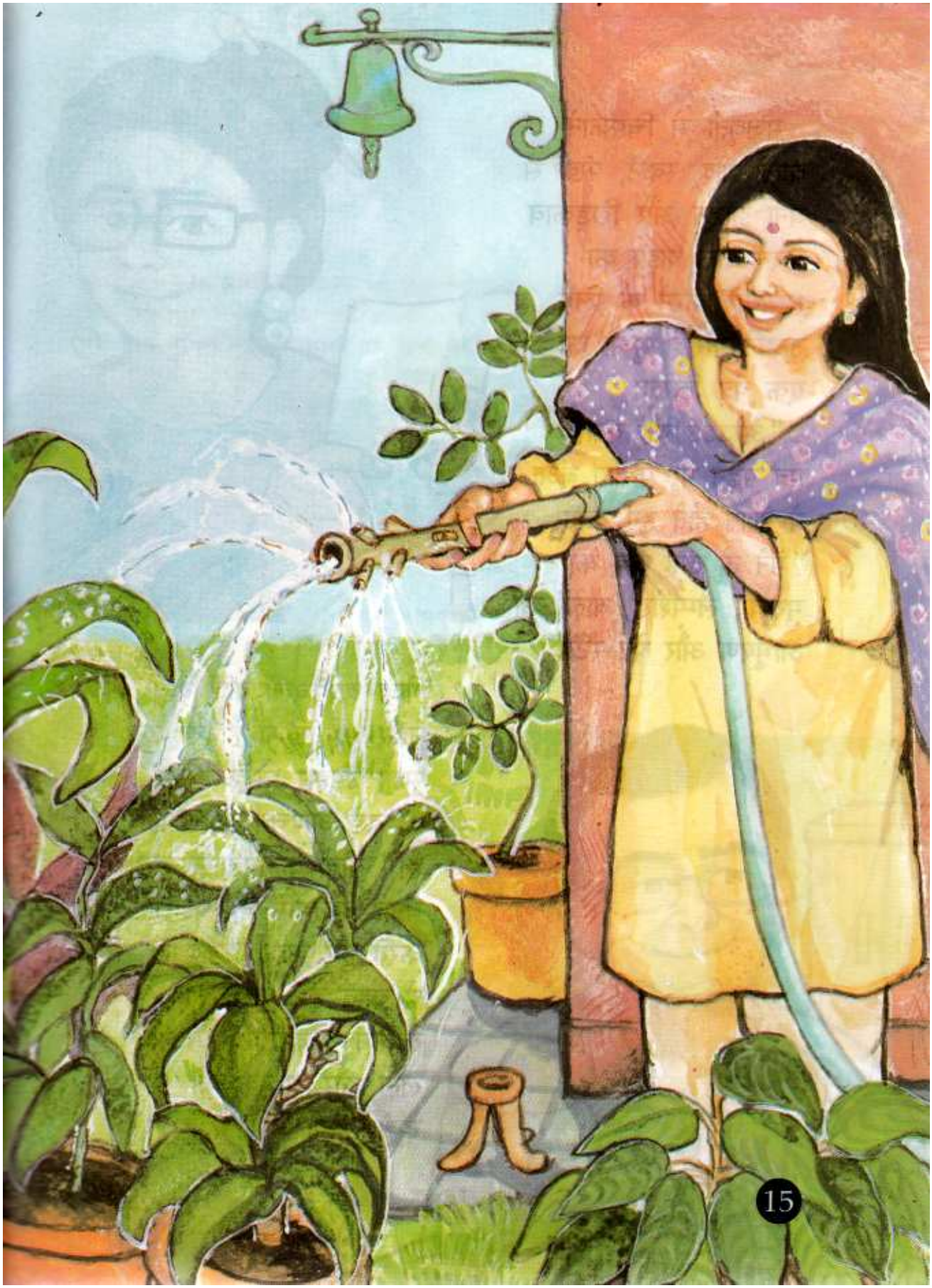

मज़बूती से चिपकाने वाली गोंद, स्कर्ट, पंखों से बना झाड़न और छिड़काव करने वाले पाइप का धन्यवाद करने के लिए उन्होंने फरीदा बुआ को एक पत्र लिखा।

"अरेऽऽऽ यह क्या!" पत्र पढ़ने पर फरीदा बुआ ने हैरान होते हुए कहा, "मैंने तो उन्हें सेब का मुरब्बा, लैम्पशेड, बालों का आभूषण और पेन-स्टैंड भेजा था। चलो कोई बात नहीं, मुझे खुशी है कि उन्हें सभी उपहार पसंद आए!"

"बड़े आश्चर्य की बात है!" बीना के पिता ने स्वयं बनाई अलमारी की प्रशंसा करते हुए कहा, "गोंद तो ये बहुत ही अच्छी है। लेकिन अलमारी में से सेब, लौंग और अदरक की खुशबू क्यों आ रही है!"

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित अंग्रेज़ी बाल-साहित्य लेखन प्रतियोगिता के रीड-अलाउड/चित्र पुस्तक वर्ग में **सरप्राइज़ गिफ्ट्स** को द्वितीय पुरस्कार मिला था। **निराले उपहार** इसका हिन्दी अनुवाद है। सी बी टी द्वारा लेखिका की अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं: **दादी की साड़ी, राजा की मूंछें, लुढ़कता पहिया, निराली पोशाक** और **श्रीमती ऊनवाला के अजीब स्वेटर**।

NIRALE UPHAAR

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 2009
पुनर्मुद्रण 2011 (दो बार)

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश या पूरे का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के इंद्रप्रस्थ प्रेस में मुद्रित। दूरभाष : 23316970-74 फैक्स : 23721090
ई-मेल : cbtnd@cbtnd.com वेबसाइट : www.childrensbooktrust.com

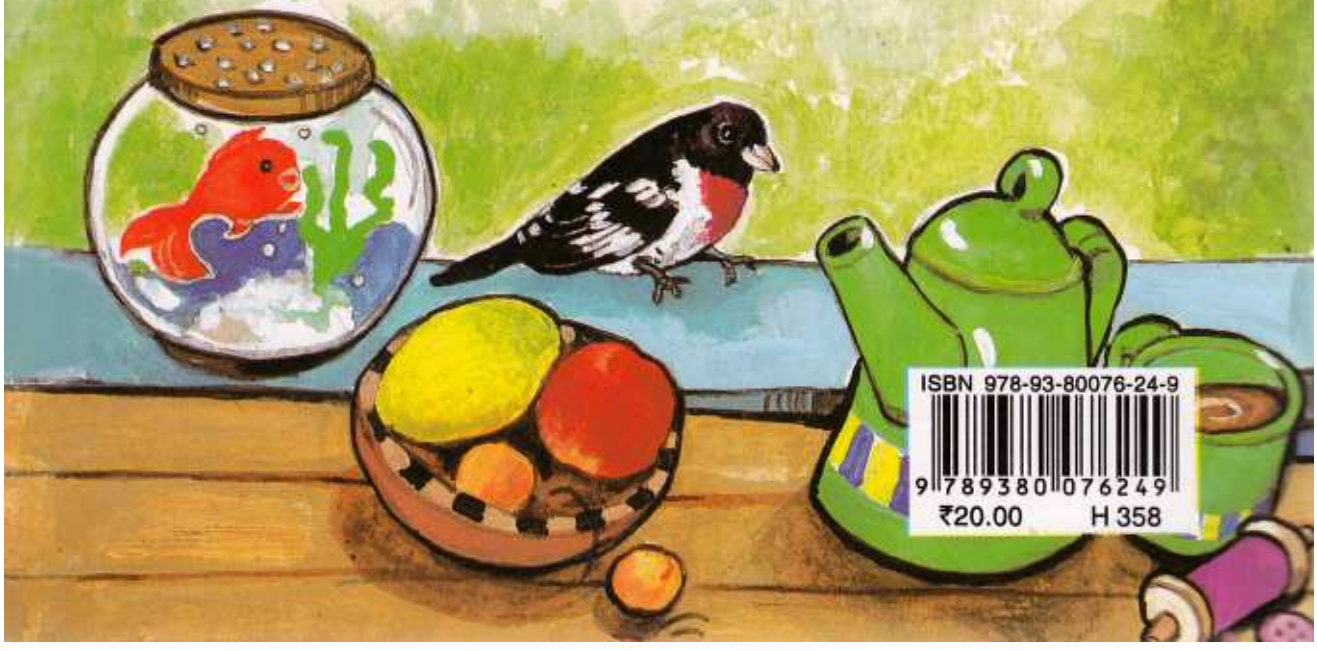

ISBN 978-93-80076-24-9
9 789380 076249
₹20.00 H 358